नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था

(THE CONTINENTAL SYSTEM OF NAPOLEON)

For : U.G. Sem-4,Unit-1,MJC-6

नेपोलियन के साम्राज्यवादी विस्तार में सबसे बड़ी बाधा इंग्लैंड था। ट्राफल्गर की पराजय के पश्चात नेपोलियन ने समझ लिया था कि युद्धों में इंग्लैंड को पराजित नहीं किया जा सकता है। ब्रिटेन की नौ सैनिक शक्ति फ्रांस के मुकाबले श्रेष्ठ थी। नेपोलियन इसे स्वीकार करते हुए कहता है कि **हमारे लिए पेरिस से दिल्ली तक सेनाएं भेजना सरल है परंतु बूलों से फोक्स्टोन तक सेनायें भेजना असंभव है।** अतः उसने जलमार्ग से इंग्लैंड को पराजित करने का विचार त्याग दिया अब उसने स्थल से समुद्र को जीतने का प्रयत्न किया। टिलसिट की संधि के पश्चात यूरोप में ऐसा कोई राज्य न रहा था जो नेपोलियन का विरोध कर सकें। उसने इन सब की शक्ति को इंग्लैंड के विरुद्ध लगाना चाहा। नेपोलियन को ***माण्ट गैलार्द*** ने सुझाव दिया कि **'इंग्लैंड दुकानदारों का देश है। अत: उसको पराजित करने के लिए उसके साथ आर्थिक युद्ध किया जाए। उसके व्यापार को नष्ट करना उसके हृदय पर चोट करना है।'**

नेपोलियन ने इंग्लैंड को परास्त करने के लिए माण्ट गैलार्द के सुझाव को मानते हुए उसे आर्थिक दृष्टि से पंगु बना देने की नीति अपनाई। इसी क्रम में उसने **महाद्वीपीय व्यवस्था**(Continental System) अथवा **महाद्वीपीय अवरोध**(Continental Blockade) की नीति अपनाई। ***फिशर महोदय*** के शब्दों में - **महाद्वीपीय योजना ग्रेट ब्रिटेन के विरोध में एक संघ था।**(The continental system was a coalition against Great Britain)

नेपोलियन की योजना थी कि यदि इंग्लैंड के उद्योगों के उत्पादित सामानों का यूरोपीय बाजार अवरुद्ध कर दिया जाए तो ये उद्योग अपने आप बंद हो जाएंगे और वहां बेकारी की समस्या पैदा हो जाएगी। उसका मानना था कि व्यापार पर निर्भर इंग्लैंड की आर्थिक नाकेबंदी करने से वस्तुओं की कीमतें गिरेगी और इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था ध्वस्त होने लगेगी। दूसरी तरफ महाद्वीप को इंग्लैंड के लिए बंद करके इंग्लैंड को फ्रांस से खाद पदार्थ खरीदने को बाध्य कर उससे बहुमूल्य धातु (बुलियन) ले सकेगा। इससे इंग्लैंड की आर्थिक स्थिति खराब हो जाएगी और फ्रांस उस पर विजय प्राप्त कर सकेगा।

<u>महाद्वीपीय योजना लागू करने के कारण</u>

इतिहासकार **थॉमसन** के अनुसार निम्नलिखित कारणों से नेपोलियन ने महाद्वीपीय योजना को लागू किया था-

- यदि इंग्लैंड के बने माल का निर्यात न होगा तो वह दिवालिया हो जाएगा। इस हालत में वह न स्वयं युद्ध कर सकेगा और न अपने मित्रों को सहायता दे सकेगा।
- इंग्लैंड पर बहुत अधिक राष्ट्रीय ऋण था। इसके लिए उसको बहुत ब्याज देना पड़ता था। अतः उसे धन की आवश्यकता थी। पेपर करेंसी को सुरक्षित रखने के लिए भी उसको धन की आवश्यकता थी। नेपोलियन का यह विचार था कि व्यापार के नष्ट हो जाने पर उसे धन नहीं मिलेगा। इससे उसकी आर्थिक अवस्था बहुत अधिक खराब हो जाएगी।
- माल का निर्यात न होने पर कल कारखाने नष्ट हो जाएंगे। बहुत से पूंजीपति तथा व्यापारी दिवालिया हो जाएंगे। देश में बेकारी फैल जाएगी ।राजनीतिक व्यवस्था बहुत खराब हो जाएगी ।फलत: परेशान होकर स्वयं इंग्लैंड संधि के लिए प्रार्थना करेगा।

- **<u>महाद्वीपीय युद्ध का प्रारंभ:</u>** महाद्वीपीय योजना को लागू करने के लिए नेपोलियन ने कई आदेश जारी किए। प्रथम आदेश **बर्लिन** से घोषित किया गया इसीलिए इसे **बर्लिन आदेश(Berlin Decree)** कहा जाता है।
- 21 Nov.1806 इन आदेश के तहत यह घोषित किया गया कि यूरोप का कोई भी देश इंग्लैंड के साथ व्यापार न करें। उन देशों में ब्रिटेन के जितने व्यक्ति हो उन सब को गिरफ्तार कर उनकी संपत्ति का अपहरण कर लिया जाये। इंग्लैंड को कोई भी पत्र अथवा पार्सल न भेजा जाए। नेपोलियन ने इस आदेश को स्पेन,हालैण्ड तथा नेपिल्स भेज दिया।

To be continued....

BY: ARUN KUMAR RAI
Asst.Professor
P.G.Dept.of History
Maharaja College,Ara.